रेडियो और विभिन्न माध्यमों से प्रसारित होने वाला जुमे का ख़ुत्बा

13 रबीउल अव्वल 1447 हिजरी, 5 सितंबर 2025

محبة النبي ﷺ بين الإتباع و الإبتداع

रसूल ﷺ से मोहब्बत: इत्तिबा और बिदअत के दर्पण में

सारी तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिसने हमें अपना सबसे बेहतरीन रसूल अता किया, हम पर अपनी सबसे महान किताब उतारी, हमें अपनी मुकम्मल शरीअत प्रदान की। मैं उसकी तारीफ़ और हम्द बयान करता हूँ, और उसी का शुक्र अदा करता हूँ, उसकी तारीफ़ का हक़ अदा नहीं कर सकता। उसने हमारे लिए दीन को मुकम्मल कर दिया और हम पर अपनी नेमत पूरी कर दी, जैसा कि उस अज़ीम और करीम ज़ात ने फ़रमाया:

الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا [المائدة:3]

"आज के दिन मैंने तुम्हारा दीन तुम्हारे लिए मुकम्मल कर दिया, और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी, और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म के तौर पर (हमेशा के लिए) पसंद कर लिया।"

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं। और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और रसूल हैं। अल्लाह तआला अपनी रहमत और सलामती उतारे मुहम्मद ﷺ पर, उनके परिवार पर और उनके तमाम सहाबा-ए-कराम पर।

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا (الأحزاب:70- 71)

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और बात सीधी-सच्ची किया करो, अल्लाह तआला तुम्हारे काम सही कर देगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा। और जिसने भी अल्लाह और उसके रसूल का कहा मान लिया, उसने बड़ी कामयाबी हासिल कर ली।"

ऐ मुसलमानो!

बेशक अल्लाह तआला ने अपने नबी मुहम्मद ﷺ को अपनी पैग़ंबरी के लिए चुना, उन्हें अपने ख़ास फ़ज़्ल और रहमत से नवाज़ा, और तमाम मख़लूक़ पर उनकी इताअत (आज्ञापालन) लाज़िम कर दी। उनका सम्मान और उनसे मोहब्बत करना सब पर फ़र्ज़ कर दिया गया । इस लिए नबी ﷺ की मोहब्बत माँ-बाप और औलाद की मोहब्बत से भी ऊपर होनी चाहिए, बल्कि अपनी जान और अपनी ज़िंदगी की मोहब्बत से भी बढ़कर होनी चाहिए।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से कोई भी पूरा ईमान वाला नहीं हो सकता, जब तक कि मैं उसके नज़दीक उसके माँ-बाप, औलाद और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ।" (सही बुख़ारी, सही मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हिशाम रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हम अल्लाह के रसूल ﷺ के साथ थे, आप ﷺ ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़ा हुआ था। उसी बीच हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल! आप मुझे (दुनिया की) हर चीज़ से ज़्यादा प्यारे हैं, लेकिन मेरी जान से ज़्यादा प्यारे नहीं।" अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया:

"नहीं, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! (तुम्हारा ईमान पूरा नहीं होगा) जब तक कि मैं तुम्हारे लिए तुम्हारी जान से भी ज़्यादा प्यारा न हो जाऊँ।" तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: "अब, अल्लाह की क़सम! आप मुझे मेरी जान से भी ज़्यादा प्यारे हैं।" तब आप ﷺ ने फ़रमाया: " ऐ उमर! अब बात बनी है, अर्थात् अब तुम्हारा ईमान मुकम्मल हुआ है।" (सही बुख़ारी)

ऐ बरकतों से नवाज़े गए लोगो!

बेशक सहाबा-ए-कराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अल्लाह के रसूल ﷺ से सच्ची मोहब्बत की। उनकी मोहब्बत इतनी गहरी और मज़बूत थी कि उनके कान और उनकी आँखें भी उस मोहब्बत के आगे झुक गई थीं, और उन्होंने उस मोहब्बत के लिए अपनी

जानें और अपना ख़ून तक क़ुर्बान कर दिया। उनकी मोहब्बत सच में पवित्र और सच्ची थी, न कि सिर्फ़ खाली दावे और दिखावे वाली मुहब्बत। और याद रखें, जो दावे साफ़ और मज़बूत दलील के बिना हों, उनके दावेदार सिर्फ़ दावेदार बनकर ही रह जाते हैं। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु को देखिए, जब हिजरत का समय आया और अल्लाह के रसूल ﷺ पर दुश्मनों का दबाव बहुत बढ़ गया, तो वे रो पड़े। उन्हें देख कर नबी ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ अबू बक्र! तुम क्यों रो रहे हो?"
उन्होंने जवाब दिया:

أَمَا وَاللَّهِ مَا عَلَى نَفْسِي أَبْكِي، وَلَكِنْ أَبْكِي عَلَيْكَ

"अल्लाह की क़सम, मैं अपने लिए नहीं रो रहा, बल्कि मैं आप के लिए रो रहा हूँ।" (मुस्नद अहमद, और अल्लामा अलबानी ने इसे सही कहा है)
उहुद युद्ध के अवसर पर, जब मुसलमान मुश्रेकीन की घेराबंनी में आ गए, और मुश्रेकीन ने ग़लबा हासिल कर लिया, नबी ﷺ ने मुश्रेकीन के जोरदार और ताबड़तोड़ हमले के बावजूद अपने स्थान पर दृढ़ता दिखाई और मुसलमानों का बचाव किया। तब हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: "मेरे माँ-बाप आप पर फ़िदा हों! आप पीछे मत हटिए, कहीं क़ौम के तीर आपको न लग जाएँ, मेरी गर्दन आपकी गर्दन के लिए ढाल है!" (सही बुख़ारी, सही मुस्लिम)

ऐ ईमान वालो!

नबी ﷺ से मोहब्बत की निशानियों में से है कि उन पर ईमान लाया जाए, उनकी बताई हुई बातों का समर्थन किया जाये, और जिन कामों का उन्होंने हुक्म दिया, उनमें उनकी इताअत की जाए। यही मुहम्मद ﷺ को अल्लाह का रसूल मानने की असली मांग है। अल्लाह कहता है:

فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنْزَلْنَا وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (التغابن:8)

" तुम अल्लाह पर, उसके रसूल पर और उस नूर (रोशनी) पर ईमान लाओ, जिसे हमने नाज़िल किया है। और अल्लाह तुम्हारे हर अमल से अवगत है।" (सूरह अत्तग़ाबुन: 8)

नबी ﷺ से मोहब्बत की निशानियों में शामिल है कि उनकी ज़िंदगी में और उनकी वफ़ात के बाद उनकी इज़्ज़त और उनका सम्मान किया जाए, और उनकी सुनत का भी आदर किया जाए। अल्लाह कहता है:

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا * لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ (الفتح:8-9)

"बेशक, हमने आपको गवाही देने वाला, खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है, ताकि (ऐ मुसलमानो) तुन अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और उसकी मदद करो, और उसका अदब करो।" (सूरह अल-फ़त्ह:8-9)

अल्लाह तआला कहता है:

فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنْزِلَ مَعَهُ أُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (الأعراف:157)

"तो जो लोग उस नबी पर ईमान लाते हैं, उनकी मदद और समर्थन करते हैं, और उस नूर (रोशनी) का पालन करते हैं जो उनके साथ भेजा गया है, ऐसे लोग पूरी तरह कामयाब हैं।" (सूरह अल-आराफ़: 157)

शेख़ुल-इस्लाम इब्न तैमिय्या रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं:

"ताज़ीर" का मतलब है नबी ﷺ की मदद और समर्थन करना, और हर उस चीज़ से बचना जो उन्हें तकलीफ़ पहुंचाने का सबब बने। और "तौकीर" का मतलब है नबी ﷺ के लिए हर वह चीज़ अपनाना जो सुकून, इत्मिनान, सम्मान और आदर का कारण बने, और उनके साथ ऐसा सम्मान और आदर बरतना जो उनकी इज़्ज़त और महानता को नुकसान पहुँचाए बिना, उनके सम्मान और हुरमत को सुरक्षित रखे।"

अल्लाह के नबी ﷺ से मोहब्बत की निशानियों में शामिल है कि नबी ﷺ की सीरत और आदर्श को पहचाना जाए, और उनके अख़लाक़ और औसाफ़ पर चिंतन मनन किया जाए।

अल्लाह तआला ने कहाः

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا (الأحزاب:21)

"बेशक, तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन नमूना मौजूद है, हर उस आदमी के लिए जो अल्लाह तआला और क़यामत के दिन की उम्मीद रखता है और ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह तआला को याद करता है।" (सूरह अल-अह्ज़ाबछ 21)

अल्लामा इब्न क़सीर रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं: "यह महान आयत अल्लाह के रसूल ﷺ को उनकी बातों, उनके कामों और हालात में नमूना और आदर्श बनाने के लिए एक बुनियादी और महत्वपूर्ण क़ायदा है।"

अल्लाह के नबी ﷺ से मोहब्बत की निशानियों में शामिल है कि उनकी सुन्नत को आम किया जाए, उसका बचाव किया जाए और उसके प्रति गैरत रखी जाए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से कोई अपनी औरतों को मस्जिद जाने से न रोके।" इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के बेटे ने कहा: "हम तो उन्हें जरूर रोकेंगे।" तब हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: "मैं तुम्हें रसूल ﷺ की हदीस बता रहा हूँ और तुम ऐसी बात कह रहे हो।" इसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बेटे से अपनी मौत तक बात नहीं की। (इस हदीस को इमाम बुख़ारी, इमाम मुस्लिम और इमाम अहमद ने रिवायत किया है, और इसके शब्द मुस्नद अहमद के हैं।)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी को कंकरी फैंकते हुए देखा, तो उन्होंने उससे कहा: "कंकरी मत फेंको, क्योंकि अल्लाह के रसूल ﷺ ने कंकरी फेंकने से मना किया है, और कहा है: इससे न तो शिकार होता है, और न ही यह दुश्मन को चोट पहुँचाती है, लेकिन इससे दांत टूट जाते हैं और आँख फूट जाती है।" बाद में उन्होंने देखा कि वही आदमी फिर कंकरी फेंक रहा है, तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे कहा: "मैं तुमसे नबी ﷺ की हदीस बयान

कर रहा हूँ कि नबी ﷺ ने इससे मना किया है, और तुम फिर वही काम कर रहे हो! अब मैं तुमसे इतने दिनों तक बात नहीं करूंगा।" (सही बुख़ारी, सही मुस्लिम)

मैं वही कह रहा हूँ जो आप सुन रहे हैं, और अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए माफी मांगता हूँ; इसलिए आप भी अल्लाह से माफी मांगें, बेशक वह बहुत माफ करने वाला और बहुत दया करने वाला है।

दूसरा ख़ुत्बा

सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जो सारी दुनिया का पालनहार है। उसी के लिए सबसे अच्छी हम्द और तारीफ़ है। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई हक़ीकी माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, जो हक़ कहता है और हिदायत का रास्ता दिखाता है।

और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। अल्लाह तआला उन पर, उनके परिवार और सहाबा पर रहमतें और सलाम उतारे।

अम्मा बाद: ऐ अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह का तक़वा सबसे बेहतरीन रास्ता और सबसे सीधी राह है।

ऐ मुसलमानो!

नबी ﷺ से मोहब्बत का सबसे बड़ा और उच्चतम तरीका यह है कि उनकी इताअत की जाए, उनके हुक्मों पर अमल किया जाए, और उनके हुक्मों के सामने सिर झुका दिया जाए। अल्लाह तआला फरमाता है:

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ(آل عمران:31)

"कह दीजिए! अगर तुम अल्लाह तआला से मोहब्बत रखते हो तो मेरा अनुसरण करो, खुद अल्लाह तआला तुमसे मोहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा। और अल्लाह तआला बड़ा माफ़ करने वाला और बहुत दयावान है।" (सूरह अले इमरान: 31)

अल्लामा इब्न क़सीर रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं: "यह महान आयत हर उस आदमी पर लागू होती है जो अल्लाह से मोहब्बत का दावा करता है लेकिन मुहम्मद ﷺ के तरीक़े

पर नहीं चलता। ऐसा आदमी अपनी मोहब्बत के दावे में झूठा है, जब तक कि वह अपनी बातों, अपने कामों और अपने हालात में शरीअते मुहम्मदी और दीन नबवी का पूरी तरह पालन न करे।"

सच्ची मोहब्बत किसी बिदअत में नहीं, बल्कि अल्लाह के नबी ﷺ की आज्ञाकारिता और उनके अनुसरण में छिपी हुई है।अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَأَنَّ هَذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ذَلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ (الأنعام:153)

" यह मेरा रास्ता है जो बिल्कुल सीधा है। इस लिए इस रास्ते पर चलो और दूसरे रास्तों पर मत चलो, क्योंकि वे रास्ते तुम्हें अल्लाह के सही रास्ते से दूर कर देंगे। इसका तुमको अल्लाह तआला ने ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम परहेज़गारी अपनाओ।" (सूरह अल-अंआमः 153)

मुजाहिद रहिमहुल्लाह ने अल्लाह तआला के फ़रमानः وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ "और दूसरे रास्तों पर मत चलो" के संदर्भ में फ़रमाते हैं कि ये बदअतें और शुब्हात हैं।

इसलिए नबी ﷺ से मोहब्बत का मतलब उनकी ज़ात में बढ़-चढ़ कर अतिशयोक्ति करना, उनसे मदद माँगना, मीलाद या जश्न मनाना, या घरों और जगहों को कथनियों और नारों से सजाना नहीं है। बेशक सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम, जो सबसे महान और बेहतरीन उम्मत थे, ऐसी बातों की ओर ध्यान नहीं देते थे और न ही मीलाद मनाते थे। अगर यह सचमुच कोई भलाई और नेक काम होता, तो वे हम पर इसमें बाज़ी ले जाते। ऐ तौफ़ीक़ पाने वाले भाइयो! क्या आप जानते हैं, कि सबसे पहले मीलाद मनाने की बिदअत फ़ातिमी सल्तनत के बादशाहों ने ईजाद की थी, जो चौथी सदी हिजरी में हुकूमत करते थे।

ये लोग दावा करते थे कि वे नबी ﷺ की नस्ल से हैं, लेकिन हक़ीक़त में ये अब्दुल्लाह बिन मैमून अल-क़द्दाह यहूदी बातिनी की नस्ल से संबंध रखते थे। उनका सरदार और राज्य का बादशाह, जिसने झूठ और फ़रेब से खुद को "अल-हाकिम बि-अम्रिल्लाह" का उपनाम दे रखा था, आखिर में उलूहियत का दावा कर बैठा और विभिन्न बातिनी फ़िरक़ों की बुनियाद रखी।

ख़ुलासा यह है कि मीलाद मनाने की बदअत इन्हीं बुरे लोगों की बनाई हुई है। और क्या कोई समझदार कह सकता है कि उन नास्तिक और गुमराह लोगों ने ऐसा सच और हक़ खोज लिया, जो हज़रत सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु या अन्य सहाबा और सलफ़ के इमामों को मालूम न हो सका?

शैख़ुल-इस्लाम इब्न तैमिय्या रहिमहुल्लाह ने ईद मिलादुन्नबी की बदअत के सिलसिले में कहा है:

"सलफ़-सालेहीन ने ऐसा कभी नहीं किया, हालाँकि उसके लिए सभी वजहें मौजूद थीं और कोई रुकावट भी नहीं थी। अगर यह सचमुच कोई नेक और फ़ायदेमंद काम होता तो सलफ़ सालेहीन हम पर इसमें बाज़ी ले जाते, क्योंकि वे नबी ﷺ से हमसे ज़्यादा मोहब्बत और प्रेम करते थे, और नेकियाँ हासिल करने में हमसे ज़्यादा कोशिश करते थे।

सच्ची मोहब्बत और सम्मान का असली मक़ाम यह है कि उनकी पैरवी की जाए, उनकी इताअत की जाए, उनके हुक्मों पर अमल किया जाए, उनकी सुन्नत को ज़िंदा रखा जाए, उनके संदेश को फैलाया जाए, और दिल, हाथ और ज़ुबान से इस रास्ते में जिहाद किया जाए।"

इसलिए अल्लाह के बंदो! बदअतों, ख़ुराफ़ात और दीन में नई चीज़ें पैदा करने से बचो, क्योंकि: दीन में हर नई चीज़ बदअत है, हर बदअत गुमराही है, और हर गुमराही जहन्नम की ओर ले जाती है।

एक आदमी इमाम मालिक बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और पूछा: "ऐ अबू अब्दुल्लाह! मैं कहाँ से इहराम बांधूँ?" इमाम मालिक ने फ़रमाया: "ज़ुल-हुलैफ़ा से, जहाँ से अल्लाह के रसूल ﷺ ने इहराम बांधा था।" उसने कहा: "मैं मस्जिद (नबी ﷺ) से इहराम बांधना चाहता हूँ।" इमाम मालिक ने फ़रमाया: "ऐसा मत करो; मुझे तुम्हारे बारे में फ़ित्ने का ख़तरा है।" उसने कहा: "यह कौन सा फ़ित्ना है? मैं तो बस कुछ मील अधिक बढ़ा रहा हूँ!" इमाम मालिक ने फ़रमाया:

وَأَيُّ فِتْنَةٍ أَعْظَمُ مِنْ أَنْ تَرَى أَنَّك سَبَقْتَ إلَى فَضِيلَةٍ قَصَّرَ عَنْهَا رَسُولُ اللَّهِ
"इससे बड़ा फ़ितना और क्या होगा कि तुम यह समझो कि तुमने वह फज़ीलत पा ली है जिसमें अल्लाह के रसूल ﷺ पीछे रह गए थे"! मैंने अल्लाह तआला को फ़रमाते हुए सुना है:

فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (النور: 63)

"उन्हें डरना चाहिए जो रसूल ﷺ के हुक्म की मुख़ालफत करते हैं, कि उन पर कोई आज़माइश न आ जाये या उन पर कोई दर्दनाक अज़ाब न उतरे।" (सूरः अन्नूरः 63)

ऐ अल्लाह! नूरानी चेहरा और रौशन माथे के मालिक वाले मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ﷺ पर रहमतें और सलाम नाज़िल फ़रमा, और उनके परिवार, सहाबा पर भी, और उन सभी पर जो उनकी हिदायत के रास्ते पर क़यामत तक क़ायम रहें।

ऐ अल्लाह! हम तुझसे हिदायत, परहेज़गारी, पाकदामनी, और बेनियाज़ी की दुआ करते हैं। ऐ अल्लाह! हमें सीधा रास्ता दिखा और सही हिदायत प्रदान कर। ऐ अल्लाह! हमारे अमल के तराज़ू को भारी फ़रमा, हमारे माँ-बाप को नेकियों से नवाज़, और हमें जन्नत वालों में शामिल फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमारे लिए हमारा दीन सही फ़रमा जो हमारी हिफ़ाज़त करे, हमारी दुनिया सही फ़रमा जिसमें हमारी रोज़ी है, और हमारी आख़िरत सही फ़रमा जो हमारी मंज़िल है। हमारे लिए ज़िंदगी को हर नेक काम में बढ़ावा और मौत को हर बुराई से राहत का कारण बना दे।

ऐ अल्लाह! तू ज़ालिम यहूदियों की पकड़ कर और जुर्म करने वाले जायोनियों से बदला ले। अल-अक्सा, जो घायल और मफ़लूम है, उसे मुसलमानों के क़ब्ज़े में लौटा दे। ऐ अल्लाह! हमारे मुसलमान भाइयों के लिए फ़िलिस्तीन में मददगार और सरपरस्त बन, उनके ख़ून को सुरक्षित रख, उनकी इज़्ज़त और नामूस की हिफ़ाज़त फ़रमा, और अपनी तरफ़ से उन्हें मजबूती अता फ़रमा। ऐ अल्लाह! उनके दुश्मनों की हर चाल को उनके ही खिलाफ मोड़ दे।

ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और मुसलमानों के हुक्मरानों को वह ताक़त अता फ़रमा कि वे वह सब करें जो तुझे पसंद हो और जिससे तू राज़ी हो, उनके बीच एकता कायम

फ़रमा, उनके दिलों को जोड़ दे, और उन्हें सलामती के रास्ते पर हिदायत दे। उनके माध्यम से देशों और इंसानों को फ़ायदा पहुँचा।

ऐ अल्लाह! इस मुल्क़ को महफ़ूज़, शांत, खुशहाल, न्यायपूर्ण और ईमानदार, और सलामती वाला बना, और सभी मुसलमानों की ज़मीनों को भी ऐसा ही फ़रमा। और हमारी आख़िरी दुआ यह है कि सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जो सारे जहाँ का पालनहार है।

जुमा के नमूना ख़ुत्बे तैयार करने वाली समिति